VIDYA BHAWAN BALIKA VIDYA PITH

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय बिहार

Class 12 commerce   Sub. ECO(b) Date 13.04.2021

Teacher name – Ajay Kumar Sharma

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE

Question 3:

What were the main causes of India’s agricultural stagnation during the colonial period?
ANSWER:

Under the colonial rule, India was basically an agrarian economy, employing nearly 85% of its population. Nevertheless, the growth of the agriculture sector was meager. The following are the causes explaining stagnancy in Indian agriculture sector during the colonial rule:

1. *Introduction of Land Revenue System*

This was due to prevalence of various systems of Land Settlement, particularly *Zamindari* system. This system was introduced by Lord Cornwallis in Bengal in 1793. Under this system, the *zamindars*(owners of land) were required to pay very high revenue (*lagaan*) to the British government, which they used to collect from the peasants (landless labourers, who were actually cultivating). The *zamindars* were mainly concerned with extracting high revenues from the peasants but never took any steps to improve the productivity of the land. This resulted in low agricultural productivity and worsened the peasants economically.

2. *Forceful Commercialisation*

Initially before the British rule, the farmers were practicing conventional subsistence farming. They used to grow crops like rice and wheat for their own consumption. But afterwards, in order to feed British industries with cheap raw materials, the Indian farmers were forced to grow commercial crops (like indigo required by British industries to dye textiles) instead of food crops (like rice and wheat). This led to the commercialisation of Indian agriculture. This commercialisation of Indian agriculture not only increased the burden of high revenues on the poor farmers but also led India to face shortage of food grains, resources, technology and investment. Therefore, Indian agriculture remained backward and primitive.

3. *Lack of Irrigation Facilities and Resources*

Besides the above factors, Indian agricultural sector also faced lack of irrigation facilities, insignificant use of fertilisers, lack of investment, frequent famines and other natural calamities, etc. that further exaggerated the agricultural performance and made it more vulnerable.

Question 4:

Name some modern industries which were in operation in our country at the time of independence.
ANSWER:

The second half of the nineteenth century witnessed the emergence of modern industries. At the initial stage, development was confined to setting up of cotton and jute textile mills. The western parts of the country Maharashtra and Gujarat was the hub for cotton textile mills which were mainly dominated by the Indians whereas the jute industries were mainly concentrated in Bengal and were dominated by the British. In the beginning of the 20thcentury, Iron and steel industries also started emerging gradually. It was incorporated in 1907. Some other industries that were operating at a smaller scale during the British era were sugar industry, cement industry and paper industry.

Question 5:

What was the two-fold motive behind the systematic deindustrialisation affected by the British in pre - independent India?
ANSWER:

The following are the two-fold motives behind the systematic deindustrialisation affected by the British:

1. Making India a Supplier of Raw Materials: The main motive of the British government was to make India a mere supplier of cheap raw materials to feed its own flourishing industrial base.

2. Making India a Market for Finished Goods: Another important objective of the British government was to use India as a virgin market to sell the finished goods produced by the British industries

---

प्रश्न 3:

औपनिवेशिक काल में भारत के कृषि ठहराव के मुख्य कारण क्या थे?

उत्तर:

औपनिवेशिक शासन के तहत, भारत मूल रूप से एक कृषि अर्थव्यवस्था था, जो लगभग 85% आबादी को रोजगार देता था। फिर भी, कृषि क्षेत्र की वृद्धि अल्प थी। औपनिवेशिक शासन के दौरान भारतीय कृषि क्षेत्र में स्थिरता की व्याख्या करने वाले कारण निम्नलिखित हैं:

1. भूमि राजस्व प्रणाली का परिचय

यह भूमि निपटान की विभिन्न प्रणालियों, विशेष रूप से जमींदारी प्रणाली के प्रसार के कारण था। यह व्यवस्था 1793 में लॉर्ड कार्नवालिस द्वारा बंगाल में शुरू की गई थी। इस प्रणाली के तहत, ज़मींदारों (भूमि के मालिकों) को ब्रिटिश सरकार को बहुत अधिक राजस्व (लगान) देना पड़ता था, जिसे वे किसानों (भूमिहीन मजदूरों) से इकट्ठा करते थे, जो वास्तव में खेती कर रहे थे)। ज़मींदार मुख्य रूप से किसानों से उच्च राजस्व निकालने के लिए चिंतित थे, लेकिन उन्होंने कभी भी भूमि की उत्पादकता में सुधार के लिए कोई कदम नहीं उठाया। इससे कृषि उत्पादकता कम हुई और किसानों को आर्थिक रूप से नुकसान हुआ।

2. बलशाली व्यावसायीकरण

ब्रिटिश शासन से पहले, किसान पारंपरिक निर्वाह खेती का अभ्यास कर रहे थे। वे अपने स्वयं के उपभोग के लिए चावल और गेहूं जैसी फसलें उगाते थे। लेकिन बाद में, ब्रिटिश उद्योगों को सस्ते कच्चे माल के साथ खिलाने के लिए, भारतीय किसानों को खाद्य फसलों (जैसे चावल और गेहूं) के बजाय वाणिज्यिक फसलों (जैसे ब्रिटिश उद्योगों द्वारा डाई वस्त्रों के लिए आवश्यक इंडिगो) उगाने के लिए मजबूर किया गया था। इससे भारतीय कृषि का व्यवसायीकरण हुआ। भारतीय कृषि के इस व्यावसायीकरण ने न केवल गरीब किसानों पर उच्च राजस्व का बोझ बढ़ाया, बल्कि भारत को खाद्यान्न, संसाधनों, प्रौद्योगिकी और निवेश की कमी का सामना करना पड़ा। इसलिए, भारतीय कृषि पिछड़ी और आदिम रही।

3. सिंचाई सुविधाओं और संसाधनों की कमी

उपर्युक्त कारकों के अलावा, भारतीय कृषि क्षेत्र में सिंचाई सुविधाओं की कमी, उर्वरकों का नगण्य उपयोग, निवेश की कमी, बार-बार अकाल और अन्य प्राकृतिक आपदाएं आदि का सामना करना पड़ा, जिसने कृषि प्रदर्शन को और अधिक बढ़ा दिया और इसे और कमजोर बना दिया।

प्रश्न 4:

कुछ आधुनिक उद्योगों के नाम बताइए जो आजादी के समय हमारे देश में चल रहे थे।

उत्तर:

उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्ध आधुनिक उद्योगों के उद्भव का गवाह बना। प्रारंभिक चरण में, विकास कपास और जूट कपड़ा मिलों की स्थापना तक ही सीमित था। देश के पश्चिमी हिस्से महाराष्ट्र और गुजरात सूती कपड़ा मिलों के केंद्र थे, जिनमें मुख्य रूप से भारतीयों का वर्चस्व था, जबकि जूट उद्योग मुख्य रूप से बंगाल में केंद्रित थे और ब्रिटिशों का वर्चस्व था। 20 वें दशक की शुरुआत में, लौह और इस्पात उद्योग भी धीरे-धीरे उभरने लगे। इसे 1907 में शामिल किया गया था। कुछ अन्य उद्योग जो ब्रिटिश काल के दौरान छोटे स्तर पर चल रहे थे, चीनी उद्योग, सीमेंट उद्योग और कागज उद्योग थे।

प्रश्न 5:
पूर्व-स्वतंत्र भारत में अंग्रेजों द्वारा व्यवस्थित व्यवस्थित औद्योगीकरण के पीछे दो गुना मकसद क्या था?
उत्तर:

अंग्रेजों के प्रभाव वाले व्यवस्थित विखंडन के पीछे दो मकसद हैं:

1. भारत को कच्चे माल का आपूर्तिकर्ता बनाना: ब्रिटिश सरकार का मुख्य उद्देश्य भारत को सस्ते कच्चे माल का एक मात्र आपूर्तिकर्ता बनाना था ताकि वह अपने फलते-फूलते औद्योगिक आधार को खिला सके।

2. भारत को तैयार माल के लिए एक बाजार बनाना: ब्रिटिश सरकार का एक और महत्वपूर्ण उद्देश्य ब्रिटिश उद्योगों द्वारा उत्पादित तैयार माल को बेचने के लिए भारत को एक कुंवारी बाजार के रूप में उपयोग करना था।